भूमिका

औद्योगीकरण अपने जन्म से ही सामाजिक विकास कि अवधारणा से जुड़ा है। विश्व में जिस समय उद्योगों का विकास हो रहा था या शुरू हुआ उस समय इंग्लैंड में भूखमरी एवं सामाजिक अशांति एंव असुरक्षा का वातावरण था। औद्योगिक विकास के सहारे ग्रेट ब्रिटेन जैसा देश विश्व में उभरा औद्योगीकरण के जरिए समाज का विकास हुआ। इंग्लैंड के अनेक विचारवंतों एवं वैज्ञानिको ने देश में चल रही प्रमुख समस्याओं का अध्ययन करना शुरू कर दिया। जिससे उन मूल सम स्याओं को समजकर उन चीजों के जरिये देश से प्रमुख समस्याओं खत्म करने का प्रयास किया गया और विकास के राह पर आगे बढ़ा।

औद्योगीकरण आधुनिक युग का एक सबसे महत्वपूर्ण शब्द हैं। साथ ही साथ इस शब्द के महत्व में भी वृद्धि होती जा रही है। इस शब्द का विश्लेषण करें तो इस शब्द कि उत्पत्ति उद्योग से हुई है। उद्योग मानव जीवन का आधार हैं और इसके अभाव में मनुष्य अपने आस्तित्व कि रक्षा नही कर सकता । वैसे भी उद्योग का साधारण अर्थ परिश्रम करना या प्रयास (efforts) करना आदि। आधुनिक सन्दर्भ में सबसे पहले औद्योगीकरण का विकास इंगलेंड मे 18 वीं शताब्दी में हुआ। औद्योगीकरण की इस क्रान्ति के पहले वहाँ पर भी अनेक प्रकार के समस्याओं का सामना करना पड़ा था, जैसा कि भूखमरी, बेरोजगारी।

औद्योगीकरण तकनीकि विकास कि वह प्रक्रिया है जिसमें श्रम विभाजन के साथ विशेष कार्य शक्ति द्वारा क्रेता एवं विक्रेता के मध्य संतुलन स्थापित होता है। इससे नगरीकरण को बढ़ावा मिलता है। असल में औद्योगीकरण के जरिए आर्थिक विकास कि धारणा सर्वमान्य है, जिसमे

सम्पूर्ण सामाजिक जीवन के उन्नत होने के दावे किए जाते हैं। उद्योगों कि स्थापना का मूल उद्देश्य जीवन उपयोगी वस्तुओं का उत्पादन करना होता हैं। इसलिए ऐसा कहा जाता है कि औद्योगीकरण का संबंध उत्पादन से है। यंत्रों एवं मशीनों के अभाव में औद्योगीकरण नही किया जा सकता। इसलिए यह कहा जा सकता है कि औद्योगीकरण से पूंजी का विकास एवं विस्तार किया जाता है। जिसका उद्देश्य आर्थिक विकास एवं राष्ट्रीय प्रगति करना होता हैं।

अनेक विदेशी कंपनियाँ भारत में आए और उद्योगों के साथ भारत में यातायातका भी विकास बड़ी मात्रा में हुआ। इन सब का परिणाम यह देखने को मिलता है कि, भारत में नवीन औद्योगिक व्यवस्था का जन्म हुआ।

भारत में औद्योगीकरण पूर्ण रूप से 1947 के बाद ही आया लेकिन भारत में सूती वस्त्र और जूट कि मिलों में बाष्प शक्ति का प्रयोग उन्नीसवी शताब्दी के उत्तरार्द्ध से ही हो गया था। जब भारत में औद्योगीकरण कि शुरुआत हुई उस समय से लेकर आज -तक सामाजिक अशांति या औद्योगीकरण का प्रभाव मानव समाज के प्रत्यक क्षेत्र पर पड़ा है। औद्योगीकरण के जरिए समाज मे आनेक समाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक राजनीतिक ऐसे अनेक प्रकार के परिवर्तन हो रहे हैं। विकास के नाम पर अनेक पूंजीपति लोग एवं उद्योगपति दोनों मिलकर अनेक प्रकार के परियोजनाए बना रहे हैं सरकार भी इन लोगों को साथ दे रही है। जहाँ पर कंपनी या प्लांट लगाया जा रहा हैं वहाँ पर जिन किसानो कि जमीनें हैं उनकि जमीन कम पैसे में खरीद रहे हैं और उन किसानों को पुनर्वास कि आशा दिखा कर उनको जमीन के बदले कुछ नहीं मिलता उन किसानो, पीड़ितों, ग्रामीणों में औद्योगीकरण के बारे में अशांति दिन प्रति दिन बढ़ जा रही है।

इसी तरह से विदर्भ मे भी औद्योगीकरण बडा ही तेजी से हो रहा हैं। यहाँ पर आनेक प्रकार के कंपनिया हैं जिसमे पावर प्लांट, स्टील कंपनिया, कोयला फिल्टर कंपनियाँ हैं ऐसे अनेक प्रकार के

कंपनियों का बहुत तेजीसे विकास हो रहा हैं लेकिन इनकि वजह से समाज में अनेक प्रकार कि सामाजिक अशांति दिखाई दे रही हैं। उनके अशांति के क्या कारक हैं? यह देखना बहुत जरूरी है।

विकास और आधुनिकता आज ऐसे सम्प्रत्यय हैं जिनके सहारे लोगों की कामनाओं, आकांक्षाओं, समाज निर्माण की प्रक्रिया आदि की जांच की जाती हैं, उनका लेखा-जोखा किया जाता हैं और उनके औचित्य–अनौचित्य का फैसला किया जाता हैं। विकास और आधुनिकता दोनों दो विभिन्न प्रत्यय अवश्य हैं परंतु दोनों में अन्योन्याश्रय सम्बन्ध हैं। विकास के नाम पर आज दुनिया भर में लोगों की शांति के खिलाफ एक युद्ध चल रहा हैं। विकास और प्रगति के नाम पर लोगों की शांति छीन ली गई हैं। जब-तक आर्थिक विकास की मर्यादा नहीं मान ली जाती, तब तक लोग अपनी शांति वापस नहीं पा सकेंगे। आज समान्य जीवनमान से संतोष मानना या आत्मनिर्भर्ता को मूल्य मानना, यह विकास के लिए बड़ा घातक माना गया हैं। आर्थिक विकास का यह नया रूप लोगों की शांति के खिलाफ एक समस्या ही है।

विकास यह शब्द 17 वी सदी के मध्य से आया है, इसका पूर्ववर्ती शब्द dievelop था जोकि फ्रेंच शब्द developer से आया था। इस शब्द का प्रयोग लपेटने या बाँधने के विपरीत अर्थ में किया जाता था। 18 वी सदी में इसका रूपकात्मक विस्तार हुआ और इसने विकास (developing) के अर्थ को भी (facuities..... of humen mind:- मानवीय मन के अवयओं के संदर्भ में) शामिल किया गया। 18 वी सदी के मध्य में यह जीव विज्ञान में evalution के सामीप्य अर्थ वाला शब्द बना। 19 वी सदी में आकर के राष्ट्रों के संदर्भ में इसका प्रयोग किया जाने लगा। 1878 में आकर industry के अर्थ में इसका प्रयोग होता हैं। और बाद में आकर underdeveloped के विपरीत अर्थ में प्रयुक्त होता है (20 वी सदी में)। 1945 के बाद

इस शब्द के अर्थ में कई आयाम जुड़े जब एक नया शब्द underdeveloped उछला- (1) प्राकृतिक संसाधनों का उचित उपयोग न होना। (2) stage of development के रूप में इसका प्रयोग होने लगा।

यह शब्द अपने आप में सरल दिखता है लेकिन बहुत ही जटिल है क्योंकि कई अर्थशास्त्री कहते हैं कि underdeveloped थोपी गयी अवधारणा हो सकती है, जब कि जिसपर थोपा जा रहा है वह अपने अनुसार, अपने समय में विकसित हो। विकास की इस अवधारणा (आधुनिक) में विकासशील राष्ट्रों को अनुदान दिए जाने की प्रक्रिया में उनकी अस्मिता का खारिजपन निहित है। पूरे विश्व बाजार के नियम को उनकी subsitance economy पर लादना था। (विलियम्स, रेमंड:1976)

विकास परिवर्तन की एक प्रक्रिया है। जिसके द्वारा एक देश से अधिकाधिक नागरिक उच्च भौतिक रहन-सहन के स्तर, स्वास्थ्य एवं दीर्घ जीवन प्राप्त करने के साथ-साथ अधिकाधिक मात्रा में शिक्षित होने का प्रयास करते हैं। दुसरे शब्दों में, सामाजिक जीवन में गुणात्मक सुधार (स्वास्थ्य, पोषाहार, शिक्षा, आवास, औसत रहन-सहन की दिशायें आदि) तथा मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति को विकास कहते हैं।

भूमि अधिग्रहण, विस्थापन, बेरोजगारी, महंगाई इन कारणों का समाज पर क्या प्रभाव पड रहा हैं सामाजिक अशांति के निर्माण में और भी क्या कारक हैं जो अशांति को बढ़ावा देते है। यह देखना बहुत ही जरूरी हैं और उनके अशांति को दूर करने का प्रयास सरकार तथा उद्योपातियों के द्वारा प्रयास करना चाहिए। किसानों का, मजदूरों का शोषन, प्रदूषण, न हो तथा सामान्य जनता का भी विकास इस औद्योगीकरण के जरिये से हो ऐसी परियोजनाएं स्थापित होने चाहिए।

विकास परिवर्तन की एक प्रक्रिया है। जिसके द्वारा एक देश से अधिकाधिक नागरिक उच्च भौतिक रहन-सहन के स्तर, स्वास्थ्य एवं दीर्घ जीवन प्राप्त करने के साथ-साथ अधिकाधिक मात्रा में शिक्षित होने का प्रयास करते हैं। दुसरे शब्दों में, सामाजिक जीवन में गुणात्मक सुधार (स्वास्थ्य, पोषाहार, शिक्षा, आवास, औसत रहन-सहन की दिशायें आदि) तथा मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति को विकास कहते हैं।

विकास और विस्थापन को भारतीय परिप्रेक्ष्य में समझने के लिए एक अन्य तथ्य पर भी गौर करना आवश्यक है। सन् 1894 में जब वर्तमान भू-अधिग्रहण कानून लागू हुआ तब भारत की जनसंख्या 27.96 करोड़ (जनसंख्या वर्ष 1891) थी। साथ ही वर्तमान पाकिस्तान और बांग्लादेश भी भारत के ही अंग थे। आज हमारी आबादी 110 करोड़ है और आज़ादी के बाद भारत में करीब 1.50 लाख वर्ग कि.मी. भूमि राज्य द्वारा अधिग्रहित की जा चुकी है, जो कि क्षेत्रफल में बांग्लादेश के बराबर बैठती है।

ये अधिग्रहण बांध, कारख़ानों, रेल, हवाई जहाज़, औद्योगिक क्षेत्र, शहरी बसाहट, सुरक्षित वन, बाघ अभ्यारण्य, सड़क निर्माण, परमाणु एवं ताप विद्युतगृह, खेल के स्टेडियम से लेकर श्मशान बनाने तक के लिए किए गए हैं। एक मोटे अनुमान के अनुसार आज़ादी के बाद से करीब 10 करोड़ नागरिक इनकी वजह से विस्थापित हुए हैं। इन विस्थापितों में से कम से कम 45 प्रतिशत बच्चे हैं। जब देश में पुनर्वास को लेकर कोई कानून नहीं है तो अंदाजा लगाया जा सकता है कि हमारा देश अपने नागरिकों को लेकर कितना संवेदनशील है? विस्थापित परिवार के मुखिया के पुनर्वास को लेकर ही सरकारें चिंतित नहीं हैं तो ऐसे में विस्थापित बच्चों की स्थिति की सहज ही कल्पना की जा सकती है।

विस्थापन और पुनर्वास की समस्याओं पर कई कमेटियां अपनी रिपोर्ट दे चुकी हैं।लेकिन विकास के नाम पर आज भी अनेक ग्रामीणों, किसानों, आदिवासियों को इस विकासकारी परियोजनाओं के नाम से विस्थापित किया जा रहा है और पीड़ितों को अनेक समस्याओं का सामना आज भी करना पड़रहा है। अंग्रेजी शासन काल से आधुनिक उद्योग धधों का विकास एवं जन्म हुआ॥ औद्योगीकरण की वजह से विकास तो हो रहा है, लेकिन उससे अनेक प्रकार के परिवर्तनों का भी होना निश्चितहै। जैसा कि छोटे-छोटे उद्योग ख़त्म हुए, नए-नए नगरों का विकास, बड़े-बड़े मशीनों के कारण बेरोजगारी, महिला तथा बाल श्रम, परिवार विघटन, आवास समस्या, बढ़ता प्रदुषण विस्थापन तथा अनेक बड़े-बड़े अपराधों को जन्म देता है। बाल अपराध, आत्महत्या, मद्यपान, वेश्यावृति, जुआ, चोरी जैसे अनेक अपराध एवं समस्या बढ़ रही हैं। इस औद्योगीकरण के बढ़ते प्रभाव से भारतीय ग्रामीण आदिवासी एवं किसानों मजदूरों में अनेक प्रकार की अशांति बढ़ रही है।

मूल बात यह है की लोकतन्त्र में विकास का अर्थ क्या हैं? किसके लिए विकास? और विकास किसके हक में ? यह प्रश्न हम सबके सामने उभरकर खड़ा हैं। आज हम सबको पता हैं की, विकास के नाम पर क्या हो रहा हैं। इस विकास को अगर देखा जाये तो केवल एक ही वर्ग का विकास हो रहा हैं। देश में अमीरों की संख्या बडी हैं तो गरीबी भी बड़ी हैं। विकास का आसमान रूप और भी भयानक होता नजर आ रहा हैं। यह कैसा विकास हैं। कहा जा रहा हैं की 90% लोग विकास का लाभ ले रहे हैं। और 90% लोग केवल 10% हिस्सा पाने में मजबूर दिखाई दे रहे हैं। उसके लिए सरकार जिम्मेदार हैं। अगर हम उन किसानों, आदिवासियों मज़दूरों की बात करे तो वे लोग कतई विकास का विरोध नहीं कर रहे हैं। वो भी चाहते हैं की विकास हो उनका भी आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विकास हो, लेकिन जो विकास करने का तरीका विकास के नाम पर जो

विस्थापन हो रहा उसके लिए व्यवस्था की जानी चाहिए जिसके कारण उन्हें बेसहाय्य होकर नहीं जीना पड़े। विस्थापितों को सही मुआवजा मिले, उनके लिए विस्थापन के बदले में अगर चाहते हैं तो जमीन के बदले जानी एवं घरों की व्यवस्था होनि चाहिए। इस पर सरकार को विचार करना चाहिए।

विस्थापितों के आंकड़ों पर अगर नजर डाले तो हमे पता चलता हैं की, जो योजनाएँ, बड़ी-बड़ी परियोजनाए चलाई जा रही हैं उन परियोजनाओं से अधिकांश लोग विस्थापित हो गए हैं। अधिकांश विस्थापित लोग मजलूम एवं बेसहारा बने हुये नजर आते हैं। उनमे से ज्यादा तर विस्थापित लोगों की संख्या जनजातीय समाज एवं ग्रामीण किसानों की पायी गई है। यह लोग सदियों से प्राकृतिक संसाधनों पर आश्रित थे और उन्ही पर उनकि गुजर बसर आधारित थी। परिणाम स्पष्ट हैं कि-हमारी सरकार एवं पूँजीपतियों, उद्योगपतियों की विकास की नीतियों और उनके फलस्वरूप होने वाले विस्थापन में जंजातियों एवं ग्रामीण किसानों का अनुपात अधिक है। इस तथ्य को अनुसूचित जनजातियों के कमिशनर और आंठवी योजना के दौरान अनुसूचित जाती के कल्याण कार्य मे कार्यकारी समूह की रिपोर्ट ने प्रमाणित भी किया है। इसलिए इस पर सरकार और हम को सोचना बहुत ही जरुरी है।